REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

पशुधन का तहसीलवार भौगोलिक अध्ययन हनुमानगढ जिले के विशेष सन्दर्भ में

अनन्तराम[1] , डॉ.आर. सी. श्रीवास्तव[2]
[1]शोधार्थी , एम.फिल. भूगोल विभाग ,डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर(राजस्थान)
[2]अध्यक्ष , भूगोल विभाग , डॉ. भीमराव अम्बेडकरराजकीय महाविद्यालय श्रीगंगानगर (राजस्थान)

प्रस्तावना

मानव की प्रारम्भिक आर्थिक क्रियाओं में पशुपालन एक प्रमुख व्यवसाय रहा है। वर्तमान में भी विश्व के अनेक देशों जैसे न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया दक्षिणी अफ्रीका, अर्जेण्टाइना आदि ने वैज्ञानिक पशुपालन पर आधारित आर्थिक क्रियाओं के विकास से अपना स्थान विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में स्थापित किया है। विश्व के अन्य विकसित राष्ट्रों जैस संयुक्त राज्य अमेरिका,कनाडा आदि में भी पशु संसाधनों से प्राप्त आय का अर्थ व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में भी कृषि और पशुपालन एक–दूसरे पर आश्रित आर्थिक क्रिया रही है, जबकि राजस्थान की अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण कृषि और पशुपालन दोनों का राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण भू–भाग शुष्क और अर्द्धशुष्क जलवायु दशाओं के अन्तर्गत है। न्यून वर्षा, सतही बालुका, मृदा और बालुका स्तूपों का विस्तार उच्च दैनिक और वार्षिक तापान्तर से इसका अधिकांश भाग कृषि के लिये उपयुक्त नहीं है। इससे इन भागों में पशुपालन जन संख्या की आजीविका का प्रमुख साधन रहा है। पश्चिम के 25 सेण्टीमीटर से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में वर्षाकालीन पौष्टिक घास सेवण, धामन, भ्रूट आदि के उत्पन्न होने से घुमक्कड़ पशुपालन प्रमुख आर्थिक क्रिया रही है।

इन्दिरा गांधी नहर के निर्माण से हनुमानगढ जिले की आर्थिक क्रियाओं में परिवर्तन परिलक्षित है। इन्दिरा गांधी नहर परियोजना व भाखड़ा नांगल परियोजना की स्टेज प्रथम से सिंचित क्षेत्र विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत बढ़ोतरी हुई है। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में स्टेज प्रथम में बालुका स्तूपों के स्थिीकरण तथा नियंत्रित चारागाह विकास को भी सम्मिलित किया है। अतः इस स्टेज में कृषि को प्राथमिकता दिये जाने से पशुपालन कृषि भी सहायक क्रिया के रूप में विकसित हुई है, लेकिन नहर के असिंचित क्षेत्र (अनकमाण्ड) में पशुपालन वर्तमान में भी प्रमुख आर्थिक क्रिया है।

शोध का उद्देश्य

1. पशुधन की संरचना का विश्लेषण करना– पशुओं के अनुसार क्षेत्र के अनुसार पशु नस्लों के अनुसार आदि।
2. पशु स्वास्थ्य व नस्ल सुधार के कार्यक्रमों एवं नीतियों का मूल्यांकन करना।
3. पशुधन की वृद्धि एवं विकास की सम्भावनाओं का विश्लेषण करना
4. पशुधन आधारित उद्योगों का विकास तथा सम्भावनाओं का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएं

1. पशुपालन ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में मुख्यतः गरीब एवं सीमान्त कृषकों द्वारा किया जाता है।
2. गाय की देशी नस्लों की जगह विदेशी नस्लों की गाय तथा भैंस ले रही है।
3. भेड़ तथा बकरी पालन का अर्थव्यवस्था में प्रमुख स्थान होता है।
4. शुष्क प्रदेश में सिंचित क्षेत्र में वृद्धि एवं कृषि में यंत्रीकरण की पशुपालन व्यवसाय पर प्रभाव पड़ा है।
5. कृषि में पशुपालन की मांग कम होने के कारण विदेशी नस्ल के पशुओं की संख्या कम हो रही है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र राजस्थान के उत्तरी भाग में स्थित है तथा यह $29^0$5′ से 30^0 6′उत्तरी क्षेत्र अक्षांश और 74^0 से 75^0 7′पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।

जलवायु—अध्ययन क्षेत्र की जलवायु शुष्क तथा अर्द्ध शुष्क प्रकार की है।

ग्रीष्म ऋतु—जिले में ग्रीष्म ऋतु में तापमान बहुत अधिक बढ़ जाता है। कभी—कभी तो यहॉ उच्चतम तापमान 50 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुॅच जाता है।

शीत ऋतु—शीत लहर के कारण ताप क्रम कभी—कभी पाला हिमांक बिन्दु तक पहुंच जाता है। यहां शीतल ऋतु में न्यूनतम तापमान 0.5^0 से तक पहुंच जाता है।

वर्षा ऋतु—हनुमानगढ जिले में वार्षिक वर्षो की औसत लगभग 260.4 मिमी. है तथा रावतसर में औसत 185 मिमी. वार्षिक वर्षा होती है। राज्य में 82 प्रतिशत वर्षा जून से सितम्बर तक के समय में होती है।

पशुधन की संरचना

भारत में पशुपालन का विशेष महत्व है अन्य देशों की तुलना में भारत में सर्वाधिक पशु है। यहॉ विश्व की कुल पशु संख्या का लगभग 25 प्रतिशत निवासी करती है। सन् 1999 के एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में लगभग 20 करोड गौ 7 करोड़ भैस, 9.5 करोड बकरिया और 19.6 करोड़ अन्य पशु है। विश्व की कुल भैसों का 57.1 प्रतिशत और गाय बैलों का 15 प्रतिशत भारत में निवास करते है। देश में गौ पशुओं की 26 से अधिक नस्लें और भैसों की 7 नस्लें मान्यता प्राप्त है। देश के कुल राष्ट्रीय आय का 15.1 प्रतिशत गाय ओर भैसों के माध्यम से प्राप्त होता है।

भारत में विशाल पशु जनसंख्या होने के बावजूद दुग्ध उत्पादन बहुत कम है। 1950—51 में दुग्ध उत्पादन मात्र 170 लाख टन था, जो सन् 2000—01 में बढ़कर 810 लाख टन हो गया। विभिन्न कार्यक्रमों में फलस्वरूप दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हुई है। फलस्वरूप प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता आवश्यक दुग्ध उपलब्धता 210 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन से थोडा अधिक 217 ग्राम है। स्पष्ट है कि देश में दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से भारत आज विश्व में पहले स्थान पर है। फिर भी पशुपालन उद्योग के आधुनिकीकरण एवं विकास की आवश्यकता है।

राजस्थान में पशुपालन महत्वपूर्ण व्यवस्थाओं में से एक है। प्राचीन समय से ही बहुत लोग पशुपालन का कार्य करते थे। आजादी से पहले गुर्जर, जाट, कुम्हार,दुधारू पशु पालते थे, सिन्धी भैड़—बकरी पालते थे तथा तेली व जांगलिया जात के लोग साण्ड पालते थे। कालबेलिया जाति के लोग, जो कि धुमक्कड़ जाति है, गधे पालते थे तथा सामन्त व जमीदार धोड़े पालते थे। 1947 से पर्व पशुओं की संख्या लगभग 22 पशु प्रति व्यक्ति अधिक थी। इसलिए कहा जाता है कि '' **यहॉ दूध व दही की नदियां बहती थी।** ''इसका मुख्य कारण आबादी का कम होना, कृषि व पशुपालन लोगों का मुख्य व्यवसाय होना उद्योग का विकासित न होना तथा पशुपालन का दूसरे व्यवसायों के मुकाबलें ज्यादा महत्व दिया जाता था। आमन में एक कहावत मशहूर थी कि ''घीना बिना नहीं जीना'' इसका अर्थ यह है कि कोई भी घर दुधारू पशु के बिना परिपूर्ण नहीं है।

पशुपालन हालांकि कृषि के बाद दूसरे स्थान पर है। पशुओं किसानों के लिए सम्पति के समान है व जीविका के लिए उन्हें पर्याप्त आय उपलब्ध करवाते है।अध्ययन क्षेत्र शुष्क व अर्द्धशुष्क हैं। कृषि वर्षा की कमी व अनियमितताओं के कारण पशुपालन ने एक बड़ा महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर लिया है।

पशुधन संगठन

हनुमानगढ़ में पशुधन (2003—2012)

(प्रतिशत में)

क.सं.	पशुधन	2003	2007	2012
1	गाय	29.40	29.89	37.68
2	भैंस	26.41	24.05	29.22
3	भेड़	22.41	21.17	14.20
4	बकरी	16.51	20.66	15.99
5	घोड़े व टट्टू	0.08	0.09	0.09

6	गधे व खच्चर	0.46	0.41	0.28
7	ऊँट	4.03	3.50	2.35
8	सूअर	0.48	0.18	0.11
9	खरगोश	0.18	0.06	0.08
कुल पशुधन		**100.00**	**100.00**	**100.00**

स्त्रोतः जिला सांख्यिकी रूप रेखा हनुमानगढ 2016

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत सन् 2003 में 29.40 गाय पायी जाती थी जो कि बढ़कर सन् 2007 व 2012 में 29.89 व 37.68 प्रतिशत हो गई। इसी प्रकार क्षेत्र में भैसों की संख्या सन 2003 में 26.41 प्रतिशत सन् 2007 में 24.05 तथा 2012 में 29.22 प्रतिशत हो गई। इसी तरह भेडों की संख्या में उक्त वर्षो के दौरान निश्रतन कमी आयी है। सन् 2003 में कुल पशुधन में भेडों की संख्या 22.45 प्रतिशत 2007 व 2012 में 21.17 व 14.20 प्रतिशत थी। इनकी कमी के मुख्य कारण चारागाहों की कमी, अनेक बीमारियों भैड पालकों की कमजोर आर्थिक स्थिति, अशिक्षा, उन काटने के गलत तरीके आदि है।

पशुधन के प्रकार

अध्ययन क्षेत्र में पशुओं की विभिन्न प्रजातियां पायी जाती है। यहॉ गाये तथा बैलों की हरियाणवी, राठी साहीवाल, थारपारकर तथा जर्सी नस्ल मुख्य रूप से पायी जाती है। भैसों की नस्लों में देशी तथा मुर्राह व रावी नस्ल मुख्य है। भैड़ों की नस्लों में चोकला, मगरा, नाली, मारवाडी व पूगल नस्ल मुख्य है। बकरियों की नस्ल में पारवाडी नस्ल पायी जाती है। ऊँटों की नस्लों में बीकानेरी जैसलमेरी, मारवाडी नस्ल तथा घोडों की नस्लों में मलानी व मारवाड़ी मुख्य है।

पशुधन के रोग एवं निदान

1. **संक्रामक रोग**—यह विशेष प्रकार के जीवाणुओं विषाणुओं या परजीवियों से उत्पन्न होते है। इनके फैलने हेतु पशुओं को आपस में सीधा सम्पर्क में आना आवश्यक नहीं होता है। अतः सभी संक्रामक रोग संसर्गज नहीं होते परन्तु सामान्यतः सध्भी संसर्गज रोग संक्रामक होते है। **उदाहरण— माता टिटेनस**
2. **संपर्कीय रोग**—यह रोगी पशु से स्वस्थ पशुओं में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्पर्क से फैलते है। मनुष्य, पशु, पक्ष, जलवायु और आहार द्वारा इन रोगों को छूत एक से दूसरे स्थान पर पहुॅचती है।
3. **परजीवी जन्य रोग**—यह आन्तरिक एवं ब्राहम् परजीविकयों के कारण होते है। जैसे जुए, चीचड़ आंत्रकृमि आदि।
4. **पोषक तत्व न्यून रोग**—यह रोग आहार में किसी एक या अधिक पोषक तत्वों की लम्बी अवधि तक न्यूनता से उत्पनन होते है। जैसे कैल्शियम की कमी से आस्थिवक्रता, विटामिन ए की कमी से रतौंधी आदि।
5. **चयापचय जन्य रोग**—यह रोग शरीर में सामान्य चयापचय प्रक्रियाओं से विचलित होने से उत्पन्न होते है जैसे मिल्क फीवर, किटोसिस आदि।
6. **एलर्जिक रोग**—शरीर में ब्रहम् तत्वों के प्रवेश पर जिन्हें शरीर अंगीकार नहीं करता तब एलर्जिक रोग हो जाता है। जैसे चर्म रोग।
7. **विषाक्तता**—यह शरीर में आहार द्वारा विष के प्रवेश के कारण उत्पन्न होते है। कुछ रसायन शरीर में प्रवेश कर विषय में बदल जाते है तथा रक्त में उनके एक न्यूनतम सीमा से अधिक मात्रा में एकत्र होने पर वह विषाक्त हो जाते है। उदाहरण— सायनाइड विषक्तता, नाइट्राइट विषक्तात आदि।
8. **जन्मजात रोग**—कुछ रोग पशुओं के पैदा होने के साथ होते है, जैसे फ्री मार्टिन।
9. **अन्य रोग**—कुछ रोगों को उपयुक्त श्रेणियों में नही रखा जा सकता है, जैसे गांठ आफरा आदि।

संक्रामक रोगों की रोकथाम–

छूत से फैलने वाले रोगों की रोकथाम हेतु प्रथम कार्य उनकी पहचान करना होना चाहिए। एक बार बीमारी की पहचान सुनिश्चित हो जाए तब उसके रोकथाम के उपाय प्रारम्भ कर देना चाहिए, जो निम्न प्रकार है–

1. **पृथक्करण**– रोगग्रस्त पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए, जिनमें रोग की आशंका हो, उन्हें भी अलग रखना चाहिए।
3. **संगरोध**– नये खरीदें पशुओं को फार्म के पुराने पशुओं के साथ न रखकर कुछ अवधि तक अलग रखा जाता है।
4. **सूचना**– छूत की बीमारी फैलने पर तुरन्त समीपस्थ पशु चिकित्सा अधिकारी या पशु चिकित्सा केन्द्र पर सूचना करनी चाहिए।
5. **मृत पशुओं का शव व बिछावन का निस्तारण**– संक्रमित शव एवं रोग ग्रस्त सम्पर्क में आये बिछावन व चारा–दाना इत्यादि को या तो जला देना चाहिए या चूने की मोटी तहों के बीच 6 फुट गहरें गड्ढे में गाड़ देना चाहिए
6. **टीकाकरण**– संक्रामक व छूत के रोगों से बचने के लिए रोग विशेष के रोग निरोधक टीकें समय–समय पर लगाने चाहिए।
7. **जीवाणु हनन**– संक्रमित स्थानों, पशु वाहन, पशु आवासों, उपकरणें आदि को जीवाणु नाशक दवाओं से उपचारित करे। पशु भवनों में लगी तार की जालियों को बेजियर लैम्प की ज्वाला से निसंक्रमित करे।
8. **चारागाह परिवर्तन**– संसर्गज रोगों का ज्ञात होते ही चारागाह को तुरन्त बदल देना चाहिए। सशंकित चारागाह को पूरी तरह जोतकर छोड़ देना चाहिए। बुझे हुए चूने का छिडकाव कर निसंक्रमित करना चाहिए।
9. **रोग प्रभावित स्वस्थ हुए पशुओं की छंटनी**–एक बार संक्रामक रोग से ग्रस्त पशु ठीक हो जाने पर भी उस रोग के जीवाणु/विषाणु को अपने शरीर में छिपाये रखता है। तपेदिक या ब्रुसेलोसिक आदि संसर्गज रोगग्रस्त पशुओं की छंटनी कर देनी चाहिए।
10. **शीघ्र निदान**– संसर्गज रोगों का निदान शीघ्र होना अत्यावश्यक है। रोग प्रथम अवस्था में ही ज्ञात होने पर उसकी रोकथाम सुगम होती है।
11. **पशु देखरेख कर्ता भिन्न हो**– जहॉ तक सम्भव हो रोगी एवं स्वस्थ पशुओं की देखरेख एक ही व्यक्ति न करे। यदि यह सम्भव न हो तो पहले स्वस्थ को चारा पानी की व्यवस्था कर फिर बीमार को देखे।
12. **पशुओं के जमाव को रोकना**– रोग फैलने की सम्भवाना होने पर चारागाह में पशुओं के एकत्र होने पर रोक लगा देना चाहिए।
13. **पशु आहार**– रोग फैलने की आशंका के समय व बीमार पशुओं को शीघ्र पचने वाला एवं पोष्टिक आहार खिलाना चाहिए।

पशुओं के प्रमुख रोग व निदान–

पशुओं में होने वाले प्रमुख बीमारियों में रिण्डरपेस्ट, खुरपका, मुंहपका, ब्लैक क्वार्टन, एन्थ्रेक्स, गलघोटू, टिक फीवर आदि प्रमुख है।

पशुओं के रोग निरोधक टीके

रोग	पशु	टीके की किस्म	टीकाकरण समय व मात्रा	प्रतिरक्षा अवधि	टिप्पणी
माता	गाय,भैंस, विदेश एवं संकर गाय	गोंट टिश्यू आप पी वैक्सीन	जनवरी–फरवरी	तीन साल	प्रथम 3 से 6 माह की आयु फिर 3 वर्ष में एक बार
खुरपका	गाय, भैंस, भेड़	एफ.एम.डी.	अप्रेल–मई गाय	एक वर्ष	प्रथम1–2 माह की

मुंहपका	सुअर	पोली वैक्सीन	भैंस 40 मिली., भेड़—बकरी बछड़े 20 मिली.		आयु पर दूसरा 6 माह व बाद में प्रतिवर्ष वर्षा से पूर्व
गलघोंटू	गाय, भैस कभी—कभी वैक्सीन	एचएस ऑयल एड्रजुवेन्ट वैक्सीन	मई,जून,गाय, भैंस 5 मिली. भेड़ 2 मिली लीटर	एक वर्ष	प्रथम बार 6 माह की आयु बाद में प्रतिवर्ष वर्षा से पूर्व
जहर बाद	गाय, भैस कभी—कभी भेड़	बी.क्यू.पोलीवेन्ट वैक्सीन	मई—जून	एक वर्ष	वर्षा से पूर्व प्रति वर्ष
गिल्टी रोग	सभी पशु	एन्थैक्स, स्पोर वैक्सीन	जुलाई—अगस्त	एक वर्ष	प्रथम बार 6 माह, फिर प्रति वर्ष
संक्रांमत गर्भपात	गाय, भैंस, भेड बकरी	ब्रूसेला स्ट्रेन 19	4—6 माह की आयु से	जीवन भर	—
तपेदिक	सभी पशु	बी.सी.सी. वैक्सीन	वर्ष में कभी भी	3 वर्ष	प्रथम बार 6 माह, फिर 3 वर्ष में एक बार

पशु आधारित प्रमुख उद्योग

वर्तमान समय में पशु पालन व्यवसाय एक फायदे का व्यवसाय बन चुका है। इसी कारण लोगों का रूझान पशुपालन की ओर बढ़ा है तथा पशुधन उत्पादों के मूल्य में निरन्तर वृद्धि हो रही है जिससे पशुपालकों को अधिक लाभ की प्राप्ति हो रही है। उदाहरणार्थ वष्र 2013—2014 में गाय—भैस के ताजे दूध की कीमत 3025. 00 व 3840.00 रू. प्रति क्विंटल थी जो कि वर्ष 2014—15 में बढकर क्रमशः 3460.00 व 4653.00 रू. प्रति क्विंटल हो गयी तथा वर्तमान समय में भी इसके मूल्यों में बढोतरी निरन्तर जारी है। इसके साथ—साथ दूध के अन्य उत्पाद जैसे देशी घी, ताजा क्रीम, मावा, दही, मक्खन छाछ आदि के मूल्य में भी वृद्धि हो रही है।

ऊन उद्योग—भारत में राजस्थान राज्य ऊन का सबसे बड़ा उत्पादक है जो कुछ राष्ट्रीय उत्पादन का 42 प्रतिशत भाग उत्पादित करता है। राज्य में लगभग 164 लाख किलों ऊन का उत्पादन होता है जिसमें से 60.94 प्रतिशत हिस्सा पश्चिमी राजस्थान में आता है।

मांस उद्योग—जिससे बकरी पालकों को अच्छी कमाई हो जाती है।क्षेत्र में बकरे के अलावा भेड, भैस, सूअर, के मांग का व्यापार भी किया जाता है। तथा प्रत्येक भेड से औसतन 11.60 किलोग्राम भैस से 56.35 किलोग्राम तथा सूअर से 53.75 किलोग्राम मीट की प्राप्ति होती है।

चमड़ा उद्योग— इन चमडियों का उपयोग कृषि उपयोग वस्तुओं जैसे रस्सी, जोता गोफन और जूती आदि बनाने में किया जाता है। बचे हुए चमड़े को चमडा बाजार में बेच दिया जाता है।

पशुओं से प्राप्त होने वाली हड्डियॉ, गोबर व उनसे प्राप्त खाद—पशुओं से प्राप्त होने वाले अपशिष्ट पदार्थ जमीन उपजाऊ करने के काम आते है। अध्ययन क्षेत्र में भेड बकरियॉ भी अच्छी संख्या में पायी जाती है तथा एक औसतन भेड व बकरी से प्राप्त होने वाला अपशिष्ट पदार्थ 250 से 500 ग्राम प्रतिदिन होता है।

समस्याऐं एवं सुझाव

न्यून वर्षा, सतही बालुका मृदा और बालुका स्तूपों का विस्तार, उच्च दैनिक और वार्षिक तापान्तर से इसका अधिकाश भाग कृषि के लिये उपयुक्त नहीं है। इससे इन भागों में पशुपालन जनसंख्या की आजीविका का प्रमुख साधन रहा है।

इन्दिरा गांधी नहर के निर्माण व भाखड़ा नांगल परियोजना से हनुमानगढ जिले की आर्थिक क्रियाओं में परिवर्तन परिलक्षित है। इन्दिरा गांधी नहर की स्टेज प्रथम से सिंचित क्षेत्र विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत बढ़ोतरी हुई । कृषि को प्राथमिकता दिये जाने से पशुपालन कृषि की सहायक क्रिया के रूप में विकसित हुई है, लेकिन नहर के असिंचित क्षेत्र (अनकमाण्ड) में पशुपालन वर्तमान में भी प्रमुख आर्थिक क्रिया है।

अध्ययन क्षेत्र में सन् 2007 में गायों की कुल संख्या 401596 थी जो सन् 2012 में बढ़कर 502071 हो गई। इस प्रकार 2007 की अपेक्षा वर्ष 2012 गायों की संख्या 25.01 प्रतिशत वृद्धि हुई। इसी प्रकार सन् 2012 में भैस, भेड़ बकरी घोडा गधा की कुल प्रतिशत वृद्धि क्रमशः 20.48, –33.49, –23.28, 6.17, –31.41 प्रतिशत हो गई।

पशुधन की समस्याए

- पशुओं की घटिया नस्लें
- चारे व चारागाहों की कमी
- पशुओं मे प्रोटीन की कमी
- आवश्यक खनिज तत्वों का अभाव
- बीमारियां– स्वास्थ्य सेवाओं की कमी
- अनार्थिक पशुओं की समस्याऐं
- पशुपालकों की निर्धनता तथा अशिक्षा
- पशुपालकों को प्रशिक्षण का अभाव
- अनुत्पादक पशुओं की देखभल में कमी
- भेड़ों तथा बकरियों के बालों की दोषपूर्ण कटाई
- सरकारी कार्यक्रम का पूर्ण लाभ न मिलना

दुधारू पशुओं की अधिक महत्वता–

पशुधन विकास कार्यक्रम–विभाग के अधीन विगत वर्षो में पशुधन विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत गोपाल योजना, एकीकृत पशुधन विकास कार्यक्रम, राजस्थान डेयरी विकास कार्यक्रम के सहयोग से गोपाल योजना कार्यक्रम, देशी गौ नस्ल सुधार कार्यक्रम आदि महत्वूपर्ण कार्यक्रम संचालित किये गये, किन्तु गत वर्षो में क्रियान्वित कार्यक्रमों में अपेक्षित सफलता नहीं मिलने के कारण विभागीय प्रजनन नीति का विभागीय समिति द्वारा पुनर्निधारण वर्ष 1997 में कराया गया, जिसमें चयनित एवं क्रमोन्नत प्रजनन नीति पर विशेष बल दिया गया।

- पशु प्रजनन एवं नस्ल सुधार कार्यक्रम
- शूकर विकास कार्यक्रम
- बकरी विकास कार्यक्रम
- गौशाला विकास कार्यक्रम
- खाद्य एवं चारा विकास कार्यक्रम
- विस्तार सेवाऐं
- पशुपालक प्रशिक्षण कार्यक्रम
- केन्द्रीय पशु प्रजनन फार्म
- दुग्ध विकास कार्यक्रम के तहत उत्तम नस्ल की भैंस उपलब्ध कराना
- खाद्य एंव चारा विकास कार्यक्रम

पशु संरक्षण सेवाऐं–

- भ्रमणशील शल्य चिकित्सा एवं बांझ निवारण इकाई
- बहुउद्देश्यीय पशु चिकित्सालय
- राज्य रोग निदान केन्द्र

- **जिला रोग निदान प्रयोगशाला**
- **पशु माता उन्मूलन योजना**
- **पशु पोषाहार कार्यक्रम**
- **एस्केड योजना**
- **पशु रोग सर्वेक्षण कार्यक्रम**

सारांश

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में पशुधन की रक्षा एवं पशुपालन व्यवसाय पर आवश्यक ध्यान दिया जाये तो देश की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है जिससे देश का चहुंमुखी विकास सम्भव हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. **अय्यर,** एस.जी.एवं **डाबसन** एन.सी. (1940) **''ए सक्सेसफुल मेथड ऑफ इम्यूनाइजेशन अग्रेस्ट न्यूकेसल डिजीज ऑफ पाउल्स''** वेटरी रिकार्ड 52 889–894 ।
2. **अरोड़ा,** एस.पी.**सिंह,** एन , **लुदरी,** आर.एस. मेहता ए के (1975) **''न्यूट्रीटिव वैल्यू ऑफ ड्रीड शुगर बीट पल्स इण्डियन, वैट जे''** 52 : 942–943 ।
3. **एलवार्य क्वाउड** (1985) **''भारत में श्वेत क्रांति''**
4. **बनर्जी,** जी.सी. (1999) **''ऐनियमल हस्बैण्ड्री''**
5. **डॉ. चौपड़ा** एस.सी. तथा **डॉ. जिन्दल** एस (2003) **भैंस पालन।**
6. **दत्ता एस** (1983) **''फिफ्टी ईयर्स ऑफ साइंस इन इण्डिया प्रोग्रेस ऑफ वैटनरी रिसर्च ''** पृ. 1–31 इण्डियन साइंस कांग्रेस ऐसोशियेसन 64 दिलकुशा स्ट्रीट कलकत्ता।
7. **डॉ. जगदीश** (1998) **''पशुपालन व चिकित्सा विज्ञान तथा मुर्गीपालन''**
8. **जॉर्ज,** पी.एस. एवं **नायर** के एन (1990) **''पशुधन व रोजगार''**
9. **जैन,** जे एल **डॉ. अवध प्रसाद** एवं **गुप्ता,** जी.एन. (1992) : **'' आर्गेनाइज्य मिल्क मार्केटिंग इन इण्डिया– सोशियों इकोनोमिक्स इम्पैक्ट''**
10. जैन जे.के. (1968) **'' पोटेण्शियल ऑफ रिसोसेर्सज एण्ड एरिड रीजन ऑफ राजस्थान ''** पीएच डी थीमिस, यूनिवर्सिटी ऑफ जोधपुर जोधपुर।